Vol 3 Issue 1 Oct 2013 ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA
UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.....

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Review Of Research
Vol. 3, Issue. 1, Oct. 2013
ISSN:-2249-894X
Available online at www.ror.isrj.net

ORIGINAL ARTICLE

मुगलकालीन चित्रकला की विषय–वस्तु एवं उस पर पश्चिमी प्रभाव

SUSHIL RANGA

Assistant Professor (Institute of Mass Communication and Media Technology, KUK)

सारांश :

सन् 1510 ई. में गोवा में पूर्तगालियों के आने के बाद यूरोप से व्यापारियों तथा लोगों का भारत में आगमन शुरू हो गया। इसके साथ ही वहां की कुछ कलाकृतियां भी भारत में आई। सबसे पहले अकबर ने इन कलाकृतियों में अपनी रूचि प्रदर्शित की। 1573 ई. में सूरत में वह एन्थोनी केब्रेल के नेतृत्व में एक पूर्तगाली दल से मिला। इसके पश्चात् उसकी रूचि यूरोप की कला तथा धर्म में विकसित हुई। 1576-77ई. में एक अन्य साथी पेट्रो, टेवरस, अकबर के दरबार में आया। जिससे अकबर यूरोपीयन संस्कृति से अधिक प्रभावित हुआ। सन् 1580ई. में अकबर की प्रार्थना पर ''जेस्ट मिशन'' फादर पश्चात् ईस्हल्फ इक्वावाइवा के नेतृत्व में अकबर के दरबार में पहुंचा। इस मिशन में बहुत सी धार्मिक किताबे, धार्मिक चित्र तथा अन्य कलाकृतियां अकबर को उपहार स्वरूप दी। इन कलाकृतियों, उत्कृष्ठ चित्रों तथा चित्रित किताबों के दरबार में आने से मुगल शैली के चित्रकारों के लिए एक नई दिशा का मार्ग खुल गया। इस समय अकबरी शैली जो कि फारसी शैली से अत्यधिक प्रभावित थी। अपने विकास चरण से गुजर रही थी। ऐसे समय में उनको बहुत-सी तकनीकी समस्याओं के समाधान के रूप में यूरोपीय शैली उनके लिए वरदान सिद्ध हुई। यूरोपीयन उत्कृष्ठ चित्रों तथा आलेखनों से केशव दास ने जो महत्वपूर्ण चित्रों की नकल तथा रंगों से सयोजित किया। वह इस बात के प्रमाण है कि मुगलों को यूरोपीयन कलाकृतियों में कितनी अधिक रूचि थी। इसी प्रकार बसादन, सांवला तथा मिश्कीन जैसे अकबर कालीन महत्वपूर्ण चित्रकारों की कृतियों से भी उनकी शैली में रूचि देखी जा सकती है।

प्रस्तावना :

इससे चित्रों त्रिआयामी प्रभाव और परिपेक्ष के नियाज में सुधार हुआ। एक प्रमुख अकबर कालीन चित्र (हरीवंश) जो लगभग 1590ई. का बना हुआ है। विक्टोरिया एण्ड अलबई म्यूजियम लंदन में सगरहित है। इस चित्र में कृष्ण को विष्णु के रूप में इंद्र से युद्ध करते दिखाया गया है। कृष्ण को गरूड के ऊपर तथा इन्द्र को सफेद हाथी पर बैठे दिखाया गया है। संघर्ष उनकी पत्नी सत्यभाना की ईर्ष्या के कारण प्रारम्भ हुआ। वह परिजात पेड के फलों को लेना चाहती थी जो पेड इन्द्र के बाग, स्वर्ग में लगे हुए थे। जब कृष्ण ने परिजात फल के अपनी दूसरी पत्नी रूकमणी को दिया और वह परिजात पेड को लेने के लिए इन्द्र के दिव्य उद्यान में चुपचाप घूसे। इसका परिणाम ही नाटकीय ढंग की लड़ाई थी। जिसका देवताओं ने आकाश में देखा। यह लड़ाई आसमान में बड़े-बड़े नीले रंग के बादलों में होती दिखायी है। सम्पूर्ण संयोजन में इन्हें तथा कृष्ण को उनके रंग के द्वारा आसानी से पहचाना जा सकता है तथा पूर्ण प्रभाविता से संयोजन आकर्षण का केन्द्र बने हुए है। कृष्ण को इन्द्र से थोड़ी ऊंचाई पर दिखाया गया है। इन्द्र के हाथी को विनयपूर्वक गरूड़ की शक्तिशाली पकड़ से छटपटाते हुए दिखाया है। अग्रभूमि में बना दृश्य, चित्र की विशेषता है। चित्र की दायी ओर अग्रभूमि में दो नावों को यूरोप के लागो से भरा हुआ दिखाया है। ऐसा लगता है कि किसी यूरोपीयन उत्कीर्ण चित्र ''समुद्र के किनारे खड़ी प्रदेश की नकल है। पहाड़ी किनारों के पीछे ऊँचे-ऊँचे भवन तथा मन्दिर हरे पत्तों के झूण्डों से युक्त पेड तथा सशक्त रंग चित्र के मुख्य विषय के साथ एक सुन्दर विरोधाभास उत्पन्न करते हैं। अग्रभूमि में चित्रित दृश्य में वातावरणीय सादृश्यता तथा परिप्रेक्ष्य का सुन्दर समायोजन है। यह चित्र अकबर कालीन बाद के चित्रों में यूरोपीयन तत्वों के समावेश को सिद्ध करता है। साथ ही यह प्रदर्शित करता है कि चित्रकारों ने यूरोपियन विषय को किस प्रकार ग्रहण करना आरम्भ किया। इसके कुछ उदाहरण निम्न है।

एक अन्य चित्र जो लगभग 1595 ई. का है। इसमें एक यूरोपीयन को पुर्तगाली टोप पहने बैठे हुए दिखाया है। इसके सम्मुख खड़े सेवक के हाथ में रखी किताब से यह यूरोपियन पढ़ रहा है। एक बिल्ली कुर्सी के पास बैठी है। अग्रभूमि में दो सेवक यूरोपियन वेशभूषा में बैठे हुए यूरोपियन शैली के बर्तनों में नाश्ता तैयार कर रहे है। सम्पूर्ण चित्र यूरोपियन शैली से प्रभावित है।

एक अन्य चित्र जो ''मैडोना तथा चाइण्ड'' का है। जिसको केशव दास ने 1600-1610 ई. में बनाया। अकबर काल में यूरोपियन कला का अनुकरण किया जा रहा था तथा मुगल कला पर इसका प्रभाव पड़ रहा था। ऐसे बहुत से चित्र बने जिनका विषय ईसाइयों से

Title: *मुगलकालीन चित्रकला की विषय–वस्तु एवं उस पर पश्चिमी प्रभाव* **Source: Review of Research [2249-894X] SUSHIL RANGA yr:2013 vol:3 iss:1**

सम्बन्धित था। अकबर काल में पश्चिमी प्रभाव के प्रादुर्भाव ने लघुचित्रण शैली की अपनी शैली को परवर्तित कर दिया। बाइजेन्टाइन मैडोना की एक प्रति अकबर की रोम से भेंट स्वरूप प्राप्त हुई तो अकबर ने अपने चित्रकारों को इस चित्र की नकल तैयार करने के आदेश दिये। यह इस बात को प्रदर्शित करता है कि शासकों की रूचि यूरोपियन विषयों में कितनी अधिक हो गई थी। इसके बाद जहांगीर के समय में यूरोपियन कला का प्रभाव अधिक दृष्टिगोचर हुआ क्योंकि कलाकार परम्परागत शैली में बदलाव चाहते थे और वे किसी नयी शैली को विकसित करने का प्रयास कर रहे थे जिसमें यूरोपियन धार्मिक प्रकृति तथा प्रतीकों ने उनकी सहायता की। एक अन्य चित्र में राजकुमार शाहजहां को हाथ में रत्न लिये खड़े हुए दिखाया गया है। लगभग 1916ई. का यह चित्र इस बात का प्रतीक है कि किस प्रकार यूरोपियन यथार्थवादी दृष्टिकोण को अपनाया जा रहा था। इस चित्र में सुनहरा प्रथा मण्डल सम्राट के व्यक्तित्व तथा विशिष्टता को प्रदर्शित करता है। जैसा कि यूरोपियन ईसाइयों के चित्रों में दिखाने को मिलता है। सम्राट के हाथ में रत्न भी यूरोपियन विभूषक आलेखन का प्रतीक है।

जहांगीर को भी यूरोपियन चित्रों तथा विषयों के प्रति अत्यधिक रूचि थी। जब उसने अपने चित्रों को संग्रहित करना प्रारम्भ किया तो वह अधिक से अधिक यूरोपियन चित्रों को संग्रहित करने का इच्छुक था। इसने ''जेसट मिशन'' के पादरियों के कुछ कलाकृतियां अपने चित्रकारों से नकल करवाने के लिए ली तथा उसने एक अज्ञात पूर्तगाली चित्रकार को अपने यहां ''मैडोना'' का चित्र बनवाने हेतु नियुक्त किया। जिसे उसके चित्रकारों ने नकल करने में अपनी असमर्थता व्यक्त की थी।

जहांगीर के सिंहासनारोहण के पश्चात् 1608 ई. में आगरा में प्रतिदिन संध्याकाल में यूरोपियन चित्रों पर विचार-विमर्श होता था। इस प्रकार बहुत अधिक संख्या में यूरोपियन चित्र मुगल दरबार में आये तथा उनको न केवल संग्रहित ही किया जाता था बल्कि उनको गहराई से अध्ययन भी किया जाता था। गोया से लाये गए एक चित्र जो तुर्की मुर्गे का मन्सूर बारीकी से अध्ययन किया गया है।

''क्राइस्ट-चाइण्ड'' तथा ''मैडाना'' के चित्रों ने मुगल शासकों को बहुत प्रभावित किया तथा ये चित्र बहुत संख्या में भारत आये और चित्रण का विषय बने। एक अन्य चित्र जो 'मैडोना विद चाइण्ड'' लगभग सन् 1610 ई. का है। जिसमें मैडोना तथा बच्चे को पलंग पर तकिये के सहारे बैठे दिखाया गया है। यह भी एक इटालियन चित्र की नकल है जो कि तेहरान इम्पीरियल लाइब्रेरी में सुरक्षित है।

''जेसट्स'' का पतन हो रहा था तथा अंग्रेज व्यापारियों की संख्या बढ़ रही थी। अत: भारत में आने वाली यूरोपियन चित्रों में परिवर्तन आया। धार्मिक चित्रों का स्थान इग्लैण्ड के राजा, रानी तथा ईस्ट इंडिया कम्पनी के डायरेक्टर के व्यक्ति चित्रों ने ले लिया तथा शिकार के चित्र, युद्ध चित्र तथा अन्य विषयों के चित्रों की मांग बढ़ गयी। लघु चित्रों में व्यक्त चित्रों को राजा द्वारा बहुत पसन्द किया जाने लगा। राजा जैम्स प्रथम के राजदूत सर टॉमस रो द्वारा ईस्ट इंण्डिया कम्पनी को लिखे गये पत्रों में चित्रों को मंगवाने का विवरण मिलता है।

जहांगीर कालीन व्यक्ति चित्रों में पहली बार सिर के चारों ओर प्रभा मण्डल का प्रयोग किया गया जो कि सूर्य का प्रतीक था तथा इसका मूलत: प्रचलन फारस में हुआ था। इसका प्रयोग बौद्ध चित्रकारों ने महायान बौद्ध धर्म के चित्रों में किया है। इसके बाद इसको बाहजन्टाइन चर्च में अंकित किया गया। मध्यकालीन यूरोपियन कला में भी इसका अंकन मिलता है। तत्पश्चात् जहांगीर को भेंट किये गये यूरोपियन चित्रों द्वारा भारत में इसका पुन: प्रचलन हुआ। अन्तत: जहांगीर ने अपने चित्रकारों को व्यक्ति चित्रों में प्रभा मण्डल चित्रित करने को कहा।

मुगल चित्रकारों ने प्रभा मण्डल युक्त देवदूतों तथा पंखयुक्त आकृतियों को यूरोपियन चित्रों से अपनाया। आगामी शाहजहां कालीन चित्रों में इन प्रतीकों का प्रयोग प्राय: चित्रों के ऊपरी भाग में अंकित किया जाने लगा। इसके अतिरिक्त चित्रों में रेखीय तथा वातावरणीय परिप्रेक्ष्य, छाया प्रकाश का नियमन पृष्ठभूमि में दृश्य चित्र इत्यादि कुछ ऐसे तत्व है जिन पर यूरोपियन प्रभाव था।

जहांगीर कालीन चित्रों में स्त्री चित्रण का प्रचलन प्रारम्भ हो गया। सुन्दर स्त्रियों को मुगल दरबार में पसन्द किया जाने लगा। इस बदलाव के कारण तथा पुष्ट पुरुषों के नग्न चित्रों तथा कुछ वर्षो बाद तक प्रेम सम्बन्ध, प्रेमी युगलों के नृत्यांगनाओं के साथ सुन्दर राजकुमारियों के चित्र अधिक बने।

यूरोपियन चित्रकारों ने एलबर्ड डयूरर एवं संडलर बंधुओं का नाम बहुत उल्लेखनीय है। क्योंकि ये वे चित्रकार थे जिनके चित्रों की मुगल चित्रकारों ने सबसे अधिक नकल की तथा मुगल शैली पर इसका बहुत प्रभाव पड़ा। यद्यपि मुगल चित्रकार डयूरर एवं संडलर बंधुओं की प्रसिद्धि के प्रति इतने जागरूक नहीं थे। तथापि उन्होंने इनकी तस्वीरों में जीवन्नता एवं प्रवाह को तुरन्त पहचान लिया था। रेखाओं का पैनापन तथा चेहरे की कुशाग्र संवेदनात्मकता जो इन यूरोपियन चित्रकारों के चित्रों में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है को भी मुगल चित्रकारों ने न केवल पहचाना वरन् धीरे-धीरे आत्मसात् भी किया।

एक अन्य चित्र में एक स्त्री को कमल की कली को हाथ में पकड़े हुए दिखाया है। यह चित्र 17वीं शताब्दी के पूर्व के संडलर बन्धुओं के उत्कीर्ण चित्र की नकल है। चित्र के ऊपर बाई और एक वृद्ध व्यक्ति चित्र तथा बीच में सेन्ट जार्ज का यूरोपियन उत्कीर्ण चित्र अंकित है। इस प्रक्रिया में प्रथम अवस्था के केवल यूरोपियन विषयों को ज्यों का ज्यों मुगल चित्रकारों द्वारा नकल किया गया किन्तु शैने:शैन: मुगल चित्रकारों के अपने चित्रों में भी यूरोपियन प्रभाव आने लगा।

मुगल दरबार में सबसे अधिक चित्र संडलर बन्धुओं के आये और विशेष तौर पर नादिराबानो, केशवदास एवं अली कली के चित्रों को प्रभावित किया। अली कली द्वारा बनाये गये एक चित्र में एक पवित्र आत्मा का ''क्राइस्ट, मैरी तथा जोसफ'' के ऊपर अवतरण दर्शाया गया है। बाइबल से सम्बन्धित विषयों को चित्रकारों ने बहुत बनाया है। इन चित्रों को शाही परिवारों में महल को सजाने में बहुत पसंद किया है।

मुगल चित्रकारों ने यूरोपियन सेना को भी अपना विषय बनाया। ''जेसटस'' का कहना है कि जहांगीर ने स्वयं ''क्राइस्ट'' का जीवन एवं मृत्यु विषय से सम्बन्धित तस्वीरे की एकत्र करवायी थी। जिसमें ''सूर्य पर क्राइस्ट एवं मैरियम'' अपने पुत्र को गोद में लिए हुए जिसकी बांहे मरियम के गले में है। मुगलीय चित्रकारी में ''सूली पर क्राइस्ट'' चित्र को स्वीकार करने का तात्पर्य यह है कि मुगल चित्रकारों ने कुरान पर प्रतिपादन इस विश्वास को कि क्राइस्ट सूली पर नही चढ़े थे बल्कि इनकी शक्ल का कोई आदमी चढ़ाया गया था। पूर्णरूप से

नकार दिया।

क्राइस्ट से सम्बन्धित चित्रों के अतिरिक्त मुगल चित्रकारों ने कुछ अन्य यूरोप में प्रचलित विषयों को भी बनाया तथा राजा सुलेमान का दरबार, भद्र चरवाहा तथा नोहो का बेड़ा आदि।

मुगल दरबारी चित्रण में युद्ध के क्रूर चित्रों के स्थान पर पशु-पक्षियों, पुष्पों, पेड़-पौधों इत्यादि के चित्र बनने लगे। एल्बम के हाशिये पर पशु-पक्षियों तथा लताओं व पुष्पों का अनेक रूप रंगों में अलकरण होने लगा। यद्यपि ये कोई नया विचार नहीं था परन्तु यूरोपीय प्रभाव के कारण इसमें अत्यधिक स्वाभाविकता एवं सजीवता आ गई थी।

इस प्रकार यूरोपियन तत्वों ने जहांगीर के विचारों तथा कलाकारों की शैली को बहुत अधिक प्रभावित किया। उसके चित्रकार जो कि नई शैली को विकसित करने में लगे हुए थे। उन्होंने यूरोपियन चित्रकला की उन्नत तकनीक को अपनाया। ये कलाकार इतने निपूर्ण थे कि इनके चित्रों में यूरोपियन तत्वों का समावेश मात्र प्रभाव के रूप में ही देखने को मिलता है न कि नकल के रूप में।

जहांगीर के पश्चात् शाहजहां कालीन चित्रों में भी पश्चिमी प्रभाव स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है। ऐसा भी नहीं लगता कि उसके समय में बहुत अधिक यूरोपियन चित्र देशों में आये हो परन्तु उसके पूर्वजों में पश्चिमी कला के प्रति अत्यधिक रूचि होने के कारण चित्रों में पश्चिमी प्रभाव आना स्वाभाविक था। अत: उसके समय के चित्र में सिंहासन के ऊपर लगे मोटे ऊनी कपड़े के पीछे बहुत सी पंख वाली आकृतियों तथा प्रभा मण्डल से युक्त देवदूत बादलों में उड़ते हुए अंकित है। इन यूरोपीय तत्वों का प्रचलन अब प्राय: सामान्य सा हो गया था तथा इनका प्रयोग मुगल कला में विभिन्न रूपों में हुआ। यूरोपीय वेशभूषा को भी मुगल कालीन कलाकारों ने अपनाया। शाहजहां कालीन एक स्त्री चित्र में यह यूरोपी व प्रभाव स्पष्ट प्रतीत होता है। इसकी सालरदार स्कर्ट, केश-विन्यास, आभूषण कलंगी लगा हीरो से जड़ित छोटे मुकुट से परम्परागत शैली में एक नयापन झलकता है। यद्यपि शाहजहां काल में चित्रकारों को उतना संरक्षण नहीं मिला जितना उसके पूर्वजों में मिला था। परन्तु फिर भी पश्चिमी तत्वों का प्रचलन कम नहीं हुआ। चित्रकार मुहम्मद जामा जो कि यूरोप से अध्ययन करके आया था। शाहजहां कालीन चित्रों में तथा उनके द्वारा बनाए गए चित्रों में विषयगत पश्चिमी प्रभाव देखने को मिलता है। उदाहरणार्थ फकीरूल्ला खान के निर्देशन में बनाई गई व्यक्ति चित्रों की एल्बम के किनारों पर चित्र के चौखटे के ऊपरी भाग पर प्राय: बादलों में उड़ते हुए दूतों को अंकित किया है। पृष्ठभूमि में इन्द्रधनुष तथा दीप्तिमान सूर्य को अंकित किया है जो कि रैफेल या उसकी शैली से जुड़ा हुआ लगता है।

जहां तक मुगल चित्रों में यूरोपियन विषय के प्रभाव का प्रश्न है तो यह प्रभाव शाहजहां कालीन चित्रों में हालांकि तुलनात्मक दृष्टि से पूर्वावेक्षा कम प्रतीत होता है। छाया के नियमन रेखीय तथा वातावरणीय परिप्रेक्ष्य तथा दृश्य चित्रों में विभिन्न तकनीक का प्रयोग बाद के मुगल चित्रों में अपेक्षाकृत कम हुआ।

औरंगजेब के राज्यकाल में यूरोपियन विषयों तथा तत्वों को प्रमुखता चित्रकला के क्षेत्र में उसकी अनिच्छा को देखते हुए संदिग्ध है परन्तु उसके राज्यकाल में जो लघु चित्र बने इन पर भी पश्चिमी विषयों का व तत्वों का प्रभाव देखा जा सकता है।

देश के अन्य भागों में भी पूर्तगाली चित्रकारों को महलों के अलंकरण के लिए नियुक्त किया जाता था। उदाहरणार्थ बीजापूर का ''ऊथर महल''। जिसके अलंकरण में पश्चिमी प्रभाव स्पष्ट देखा जा सकता है। यद्यपि इसका स्तर निम्न है। धीरे-धीरे राज्य का विभाजन हो जाने के कारण चित्रकार विभिन्न स्थानों लखनऊ, हैदराबाद, इत्यादि को चले गये और चित्रकला का स्तर बहुत गिर गया। इस समय के बनाये चित्रों में कुछ चित्र यूरोपियन चित्रों के नकल किये गये है।

हालांकि इनका स्तर गिर गया था कि उनको कला की दृष्टि से हैय समझा गया। यूरोपियन का सूक्ष्म अध्ययन करने के पश्चात मुगल चित्रकारों में जिन्होंने अपने चित्रों में यूरोपियन तत्वों को अपनाया। ऐसे कुछ चित्रकार है जो निम्न है- मुहम्मद जमा, मिस्कीन, गोवर्धन, मनोहर, शंकर गुजराती, बरावन सरवन, लाल, धन्नु, महेश, सूर्य गुजराती भवानी, हुसैन नक्काश, ताराधनराग, फारूख चेला, शिवदास, पारस, अबदुल्ला, फत्तु, अन्नत, लुमन्का, लछमन, जगन्नाथ, पयाग रामदास, असी, बन्दे, केशवदास तथा सांवला इत्यादि।

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net